विनोबा के अनुसार यज्ञ की अवधारणा

सुमन लता

समष्टि के कल्याण के लिए निःस्वार्थभाव से स्वधर्म समझकर किया जानेवाला कर्त्तव्यकर्म य ज्ञ है। कर्म बन्धन और मोक्ष दोनों का कारण है। वस्तुतः कर्म मेंकोई बन्धन नहीं है। कर्म मेरा है, यही बन्धन है। इसलिए यदि कर्म परमात्मा का है,ऐसा कहने का साहस जुटा लें तो कर्म यज्ञ हो जाता है, और उसका बन्धन गिर जाताहै। ऐसा कर्म जो मेरा नहीं परमात्मा का है वह बन्धनकारी नहीं होता, ऐसे कर्म कानाम यज्ञ है। विनोबा के अनुसार– ''अपने कृत्यों का सम्बन्ध परमेश्वर से जोड़ना चाहिए,कर्म यदि शुद्ध भावना से परिपूर्ण और सेवामय हो तो वह यज्ञ है।'' यज्ञ शब्द के अन्तर्गत यज्ञ, दान, तप, होम, तीर्थ–सेवन, व्रत, वेदाध्ययन आदि समस्त शारीरिक, व्यावहारिक, पारमार्थिक क्रियाएँ आती हैं। विनोबा ने यज्ञ का बहुत ही व्यापक अर्थ किया तथाजीवनके प्रत्येक पक्ष और प्रत्येक कर्म को गीतोक्त यज्ञ क साथ जोड़ा।